अपरा एकादशी व्रत कथा PDF

इस एकादशी व्रत को अन्य भी कई नामो से जाना जाता है जैसे – अचला और अपरा। हिन्दू के पुराणों का अनुसार कृष्ण पक्ष की एकादशी को अपरा एकादशी के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह अपार धन देने वाली होती है।

ये कथा बहुत ही प्रचलित है प्राचीन समय में एक महीध्वज नाम का एक राजा रहता था। उसके एक छोटा भाई था जिसका नाम वज्रध्वज था वह बहुत ही अधर्मी, क्रूर, और अन्यायी था। वह अपने बड़े भाई महीध्वज से बहुत नफरत करता था। उस पापी ने एक ही दिन और रात में अपने बड़े भाई की हत्या कर दी।

और उसके शव को पीपल के पेड़ के नीचे गाड़ देता है जब राजा की मौत बिना काल के हुई तो वह राजा उसी पेड़ पुर बहुत के रूप में रहने लगा और उस पेड़ पुर रहते – रहते बहुत सारे उत्पात करने लगा। ।

एक दिन अचानक धौम्य नाम के एक ऋषि उद्र के पास से गुजरे। उसने उसकी घटना देखी और जानी। अपनी तपस्या के बल से वह इस उत्पात का कारण समझ गया। प्रसन्न होकर मुनि ने उस भूत को पीपल के पेड़ पर चढ़ा दिया और परलोक का ज्ञान उपदेश दिया।

दयालु ऋषि ने स्वयं राजा की प्रेत योनि से छुटकारा पाने के लिए अपरा (अचला) एकादशी का व्रत किया और उसे अगति से जगाने के लिए अपने पुण्य भूत को अर्पित कर दिया। इस पुण्य के प्रभाव से राजा प्रेत योनि से मुक्त हो गया। उन्होंने ऋषि को धन्यवाद दिया, दिव्य शरीर धारण कर पुष्पक विमान में खड़े होकर आकाश में चले गए। हे राजन! अपरा एकादशी की यह कथा मैं जनहितार्थ कह रहा हूँ। जो इसे पढ़ता या सुनता है वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

pdfinbox.com

pdfinbox.com